प्रस्तावना

आर्नल्ड हावुजर का मानना हैं कि इतिहास में सब कुछ व्यक्तियों की उपलब्धियाँ होती हैं। व्यक्ति हमेंशा देशकाल के अंदर कुछ निश्चित परिस्थितियों में अवस्थित होते हैं और उनका व्यवहार उनकी जन्मजात क्षमता और परिस्थिति दोनों की उपज होती हैं। वस्तुतः यही ऐतिहासिक घटनाओ के द्वंदात्मक चरित्र का सार हैं।

वह आगे कहते हैं सभी ऐतिहासिक विकासों का सार यही हैं कि पहला चरण दूसरे चरण को तय करता हैं और दोनों चरण मिलकर तीसरे चरण को तय करते हैं और आगे भी इसी तरह चरण तय होता हैं। सभी पूर्ववर्ती चरण के ज्ञान के बगैर किसी एक चरण की व्याख्या नहीं की जा सकती बावजूद इस समस्त ज्ञान के उस चरण की भविष्यवाणी तो कतई नहीं की जा सकती हैं। यही बात मौर्य साम्राज्य पर भी लागू होती हैं। एक कबिलाई अवस्था से निकलकर जनपदों का निर्माण तथा मगध को केंद्र बनाकर एक साम्राज्य को खड़ा करना। यद्पि साम्राज्य हर्यक वंश के प्रतापी राजा बिम्बसार के समय में भी खड़ा हो चुका था, पुत्र अजातशत्रु ने इसका विस्तार भी किया और उदयिन ने इसको अक्षुण्य बनाए रखा किन्तु इनके द्वारा किए गए निकृष्ठ, कार्यो पिता की हत्या ने जनता में असहयोग उत्पन्न कर दिया था।

आर्नल्ड हवुजर केवल का मत साम्राज्य स्थापना और विस्तार पर ही लागू नहीं होता, बल्कि धर्म पर भी लागू होता हैं। धर्म क्या हैं? इसकी आवश्यकता क्यों हुई? और इसका स्वरूप बार-बार बदलकर समाज में क्यों आया? इन प्रश्नों पर विचार किया जाय तो कई महत्वपूर्ण उपकल्पनाए मस्तिष्क में उत्पन्न होती हैं। धर्म एक नैतिकता हैं। यदि बिना धर्म के

एक राज्य की उपकल्पना की जाय तो समाज में नैतिकता का पतन मिलता हैं और जीव विज्ञानी डार्विन का सिद्धांत 'डार्विनवाद' जीवन का आधार बनता जिसमें योग्य ही जीवित रहेगा। मानव स्वभावतः अपनी आवश्यकताओ के अनुसार महत्वाकांक्षी होता हैं। जीवन के अंत तक उसकी अवश्यकताएँ पूरी नहीं होती, वह अपने सीमित संशाधनों द्वारा अपना जीवन निर्वाह करता हैं। बढ़ती अवस्था के साथ-साथ वह धर्म की ओर आकर्षित होता रहता हैं। सभी धर्मो में धन के संचय, चोरी, हत्या, बलात्कार, झूठ बोलने को घृणित कर बताया गया हैं । क्योंकि इन सभी कार्यों से किसी अन्य व्यक्ति का नुकसान होता हैं। दूसरे मनुष्य के हितों का नुकसान न हो उसको भी उतना ही जीने का अवसर और संसाधन मिले जितना एक सम्पन्न मनुष्य को हैं। बलशाली कमजोर पर अत्याचार नहीं करे, हिंसा के बजाय अहिंसा जीवन का मार्ग बने, इन्ही सब कारणो से पाप और पुण्य को आधार बनाकर धर्म का निर्माण एवं विकास किया गया। किन्तु कभी-कभी धर्मो की गलत व्याख्यायों की वजह से समाज में धार्मिक हिंसाए और अत्याचार भी उत्पन्न हुये हैं, जिसको दूर करने के लिए भारतीय समाज उद्धारकों ने जैसे गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने नए सामाजिक आंदोलन चलाये,जो बाद में धार्मिक आंदोलनों में परिवर्तित हो गये।

इस शोध में धर्म का स्वरूप समाज में हिंसा को कम करने के लिए किस प्रकार बदल रहा और उसका समाज में किस प्रकार प्रभाव पड़ता हैं, इसकी चर्चा की गई हैं।

शोध का उद्देश्य-

मौर्य काल में अहिंसा के स्वरूप का विचार करते हुये उसके विभिन्न स्वरूप को रेखांकित करना तथा शासकों के अहिंसात्मक धार्मिक आंदोलनों में अहिंसा के तत्व का छान-बीन करना इस शोध प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य रहेगा।

शोध प्रविधि-

इस शोध कार्य हेतु शोधकर्त्ता द्वारा अपने शोध विषय से संबन्धित तथ्यों व सूचनाओं को संकलित करने में विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, आलोचनात्मक, तुलनात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत शोधार्थी ने सभी तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन करके सत्य के कसौटी पर जाँचा-परखा गया। तदोपरांत उन तथ्यों को अपने शोध प्रबंध में उल्लेख किया गया है। व्याख्यात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत शोधार्थी ने विषय से संबन्धित द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में पुस्तक, सबंधित पत्र-पत्रिकाएँ आदि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना-

प्राचीन भारत के इतिहास में खासकर 'मौर्य काल' में अहिंसात्मक तत्व मौजूद है, जिसको हमने मौर्य कालीन शासकों के शासन में जनता के साथ जो व्यवहार किया गया था, जिस कारण शोधार्थी की सोच वहाँ तक पहुंची। वह था धार्मिक आंदोलन, जिनका मुख्य

उद्देश्य मानवता की सेवा करना था। इस कारण हमने मौर्य काल में अहिंसात्मक तत्व खोजने का प्रयास किया है।